L.N. MITHILA UNIVERSITY
DARBHANGA (BIHAR)
B.A PART- 01
B.A PAPER- 01
Social Psychology
Psychology (Honours)
Topic - Thinking, Nature,

Dr. Pramod Kumar Sahu,
Assitant Professor
Guest Teacher
V.S.J. College Rajnagar
MADHUBANI BIHAR
pramodkumardbg2018@gmail.com.

संसार के सभी प्राणियों में मनुष्य को सबसे श्रेष्ठ प्राणी माना जाता है। मनुष्य की श्रेष्ठता कई रूपों में दिखाई देती है। जैसे- प्रेरकों और रुचियों की विविधता, निरीक्षण करके सीखने, स्मृति की क्षमताएँ (capacities) आदि। लेकिन इन सबसे अधिक मनुष्य की श्रेष्ठता उसकी बौद्धिक क्रियाओं में है। बुद्धि और चिंतन में गहरा संबंध है। मनुष्य जब अपनी मेज पर बैठकर कुछ लिखता-पढ़ता रहता है। आराम कुर्सी पर निश्चल और शांत होकर बैठा रहता है। टहलता रहता है। अथवा अन्यान्य किसी कार्य में लगा रहता है। तब हर समय और कार्य में वह कुछ न कुछ सोचता या चिंतन करता रहता है। इसलिए मनुष्य को एक कर्ता और चिंतक या विचारक (thinker) के रूप में ही परिभाषित किया जाता है। प्रसिद्ध दार्शनिक अरस्तु ने मनुष्य को परिभाषित करनेवाली सबसे प्रधान विशेषताओं में तर्कणा (rationality) अथवा चिंतन करने की शक्ति को ही स्थान दिया है। डेकार्ट ने भी मन (mind) और पदार्थ (matter) अर्थात शरीर (body) में अंतर बताते हुए कहा है कि मन वह है जो सोचता या विचारता है। (mind is that with thinks)

इस पुस्तक के प्रारंभिक कुछ अध्यायों में मनुष्य को कर्ता के रूप में वातावरण के साथ व्यवहार करते हुए अर्थात उसके साथ प्रतिक्रिया करते हुए वर्णित किया गया है। इस क्रम में यह बताया गया है कि व्यक्ति वातावरण की उत्तेजनाओं को ग्रहण करता है। वह प्रत्यक्षीकरण करता है।

Scanned with CamScanner

वातावरण की वस्तुओं की अवस्था में हेर-फेर भी उलट-पलट करता है। वातावरण के साथ विभिन्न तरह से प्रतिक्रिया करता है। तथा प्रतिक्रिया करना सीखता है आदि वे सब मनुष्य के कार्य के रूप को निश्चित करते है। लेकिन, इन सबके अतिरिक्त उसमें कुछ उच्चस्तरीय मानसिक क्रियाएँ भी होती है। जिन्हें विचारात्मक या चिंतन क्रियाएं कहते है। इसमें प्रकट रूप से किसी प्रकार की संवेदनिक या गति-संबंधी क्रिया नहीं होती। इसमें व्यक्ति बाह्य रूप से बिलकुल निश्चल प्रतीत होता है। वह यहीं शांतचित होकर अपने सम्मुख उपस्थित समस्याओं, योजनाओं या कार्यपद्धति के बारे में अन्दर-ही अन्दर सोचता रहता है। अतः यह एक मानसिक प्रक्रिया है, जिसमें प्रतीकों विचारों आदि की सहायता से व्यक्ति कोई निर्णय लेने अथवा किसी निष्कर्ष पर पहुँचने का प्रयास करता है।

चिन्तन की महत्ता इस बात से भी सिद्ध हो जाती है कि आज बड़े-बड़े कल-कारखाने खड़े हो सके है। घर बैठे हजारों मील दूर रहनेवालों से बात कर लेते है। दूर-दूर की घटनाओं को टेलीविजन पर सामने होते हुए देख लेते है। हजारों मील की यात्रा कुछ ही घंटों में तय कर लेते है। सुरक्षा, शिक्षा, उद्योग धंधों आदि के नए-नए उपकरण और योजनाएँ बना लेते है। हम चन्द्रमा और मंगल ग्रह पर यात्रा करते लेते है। आदि-सब-के सब चिंतन के ही प्रतिफल है। अतः स्पष्ट है कि मनुष्य की सभी मनोवैज्ञानिक क्रियाओं में चिंतन (thinking) सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण एवं जटिल क्रिया है। सच्चे अर्थ में यदि देखा जाए तो चिंतन मनुष्य की सभी मनोवैज्ञानिक क्रियाओं का किसी न किसी रूप में निचोड़ है। सीखना, स्मरण, कल्पना आदि की तरह चिंतन भी एक प्रकार की मानसिक प्रक्रिया है जिसमें व्यक्ति विभिन्न विचारों तथा प्रतीकों के सहारे उपस्थित समस्या को हल करने का प्रयास करता है। व्यक्ति का यह प्रयास आंतरिक रूप से मानसिक स्तर पर होता है और यह प्रयास तब तक चलता रहता है जब तक कि चिंतन की

विभिन्न की समस्याओं का हल ढूँढने में व्यक्ति सफल नहीं हो जाता, इसीलिए, चिंतन को एक अव्यक्त उत्पत्तीय मानसिक क्रिया कहा गया है। अतः हम कह सकते हैं। चिंतन एक अव्यक्त उत्पत्तीय मानसिक क्रिया है। जो किसी समस्या की समस्यामूलक परिस्थिति के उत्पन्न होने पर प्रारम्भ होती है। तथा समस्या का समाधान हो जाने पर समाप्त हो जाती है।

कहने का अभिप्राय यह है कि व्यक्ति के सामने जब कोई ऐसी समस्या उपस्थित होती है, जिसका समाधान कठिन मालूम पड़ता है, अर्थात जब व्यक्ति का पूर्व अनुभव, अर्जित ज्ञान, उपलब्ध साधन आदि वर्तमान में उपस्थित समस्या का समाधान करने में विफल रहते हैं। तब व्यक्ति के अंदर ही अंदर समस्या और उसकी कठिनाइयों की चेतना होती है। तथा उक्त समस्या का हल ढूँढने का प्रयास होता है। व्यक्ति के इसी मानसिक प्रयास को चिंतन या सोचना कहते हैं। चिंतनमग्न व्यक्ति अपने आंतरिक विचार-विमर्श तथा किसी विशिष्ट निष्कर्ष अथवा निर्णय पर पहुँचता है। जो समस्या के समाधान की दिशा में व्यक्ति के व्यवहार को निर्देशित करता है। इस प्रकार हम देखते हैं कि चिंतन एक मानसिक अनुक्रिया है। जो किसी समस्या के उपस्थित होने से उत्तेजित होकर उत्पन्न होती है।

चिंतन के उपर्युक्त वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि यह एक प्रकार की अप्रकट क्रिया है। जो मानसिक स्तर पर किसी समस्यारूपी उत्तेजना के प्रति की जानेवाली प्रतिक्रिया की अनुक्रिया उत्पन्न करती है। तथा चिंतन का लक्ष्य समस्या-समाधान की दिशा में निर्देशित रहता है। अतएव चिंतन को दूसरे शब्दों में समस्या-समाधान का व्यवहार भी कहा जाता है।

चिंतन का अर्थ विश्वास, मत या मान्यता अथवा कल्पना को प्रतिबिंबित करने अथवा उनकी अभिव्यक्ति से है। सामान्य तौर पर

इसका तात्पर्य मन में होनेवाले किसी प्रकार की क्रिया से लिया जाता है।

एक जन व्याख्या करने में चिंतन की वास्तविक स्वरूप बिल्कुल स्पष्ट नहीं होता इसका कारण संभवतः यह है। कि चिंतन की क्रिया में सन्निहित प्रक्रियाएँ अपरोक्ष होती है। तथा प्रत्यक्ष रूप से उनका निरीक्षण करना भी संभव नही, इसलिए वास्तविक स्वरूप को समझना मुश्किल है। दूसरी बात यह है। प्रायः हम सभी सोचते है। लेकिन शायद ही कम हम यह सोचने की कोशिश करते है। कि सोचते वक्त चिंतन किसे कहते है। अतः जन व्याख्या में प्रचलित होते हुए भी इसपर ठीक चिंतन नहीं करता है। इसीलिए, चिंतन की वास्तविक स्वरूप जन व्याख्या के विचारों से स्पष्ट नहीं है। अतः हमें मनोवैज्ञानिकों द्वारा दी गई परिभाषाओं पर दृष्टिपात करना होगा,

चिंतन व्यक्ति के समक्ष उपस्थित समस्या से उत्पन्न होनेवाली प्रतीकात्मक स्वरूप की एक विचारात्मक क्रिया है। जिसमें समस्या के प्रभाव एवं निर्देशन में कुछ प्रयत्न और भूल होती है। अतः समस्या का समाधान हो जाता है। परिभाषा में चिन्तन को प्रतीकात्मक और विचारात्मक क्रिया कहा गया है तथा यह भी स्पष्ट किया गया है। कि यह मानसिक क्रिया का प्रारंभ किसी समस्या के उत्पन्न होने से होता है। जिसके प्रभाव एवं निर्देशन में प्रयत्न और भूल की क्रिया द्वारा समस्या का समाधान किया जाता है।

Dr. Pramodkumar Sahu,
Date- 23/09/2020
Sub- Psychology